Atal Bhujal Yojana Haryana

6th Event Training

प्रथम चरण की ट्रेनिंग से 5 वें चरण तक की ट्रेनिंग का संक्षिप्त विवरण

प्रथम चरण की ट्रेनिंग में हमने सीखा:

- अटल भूजल योजना क्या है, इसके उद्देश्य और आवश्यकता
- घटता भूजल स्तर चिंता का विषय
- आपके गांव में कितना भूजल स्तर नीचे गया।
- मांग क्षेत्र और पूर्ति क्षेत्र
- DLI#1 का प्रदर्शन
- भूजल प्रबंधन में कृषकों, महिलाओं और VWSC की भूमिका
- अनुदान योजनाओं पर चर्चा
- रेन गेज, फ्लो मीटर, वाटर लेवल इंडिकेटर, FTK और पीजो मीटर की जानकारी
- जल सुरक्षा योजना और जल बजट पर चर्चा
- जल सुरक्षा के उपाय

द्वितीय चरण की ट्रेनिंग में हमने सीखा:

- लाइन विभाग की योजनाओं का अभिसरण
- सूक्ष्म सिंचाई की जानकारी
- MI के लिए आवेदन कैसे करें
- जल संरक्षण की प्रमुख तकनीक
- फसल विविधीकरण योजना
- अन्य अनुदान योजनाओं और चर्चा।

तृतीय चरण की ट्रेनिंग में हमने सीखा:

- अटल भूजल योजना में उपयोग किये जाने वाले उपकरणों के बारे में विस्तृत जानकारी
- उपकरण का उपयोग कैसे करें रीडिंग कैसे लें। रजिस्टर कैसे रखें।
- मिलेट क्रॉप्स पर चर्चा
- महिलाओं को मेनस्ट्रीम में लाने पर चर्चा
- अटल भूजल में पंचायत की भूमिका

चतुर्थ चरण की ट्रेनिंग में हमने सीखा:

- हर गांव से चयनित प्रतिभागियों को ऐसे जगह पर एक्सपोज़र विजिट करवाई गई कि जहाँ पर समक्ष में किसानों को नई तकनीक से हो रही खेती, तकनीक का इस्तेमाल और लाभ लेने की जानकारी तथा आने वाली समस्याओं समाधान कैसे करें।
- प्रतिभागियों को KVK में कृषि वैज्ञानिकों से प्रशिक्षण दिलवाया गया।
- जिसका प्रभाव क्षेत्र में देखने को मिल रहा है।

पाँचवे चरण की ट्रेनिंग में हमने सीखा:

- ड्रिप सिंचाई से गन्ना उत्पादन
- लेजर लैंड लेवलिंग की आवश्यकता और उसके लाभ
- व्यवहार परिवर्तन संचार
- कृषि योजनाओं में सबसिडी की जानकारी
- ग्राम पंचायत में सन बोर्ड प्रदर्शन, होर्डिंग्स की सुरक्षा, वर्षा, भूजल स्तर आंकड़ों को सार्वजनिक करना तथा जल की गुणवत्ता की जांच पर चर्चा
- भूजल संरक्षण और संवर्द्धन तकनीक की जानकारी देना।

छठवें चरण की ट्रेनिंग प्रारंभ

मृदा संरक्षण
सुरक्षित जीवन का
रक्षण
®© THINK with NICHE. All Rights Reserved

मृदा संरक्षण और उसका स्वास्थ्य

- मृदा अपरदन की मात्रा को कम करने के लिए किए जाने वाले प्रभावशाली कार्य मृदा संरक्षण कहलाता है। इस क्रिया के अंतर्गत विविध प्रकार से मृदा की उर्वरता को बनाए रखने के प्रयास किए जाते हैं एवं मृदा को एक स्थान पर स्थिर करने की कोशिश की जाती है। मृदा संरक्षण का मुख्य उद्देश्य मिट्टी के उत्पादन की क्षमता में वृद्धि करना एवं मिट्टी के कटाव को रोकना होता है।

मृदा संरक्षण की आवश्यकता

- मिट्टी का निर्माण खनिज पदार्थ, कार्बनिक पदार्थ एवं वायु के माध्यम से होता है जिसमें पेड़-पौधों का विकास होता है। जिस प्रकार पृथ्वी पर जीवन के लिए पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मिट्टी की भी आवश्यकता होती है। मिट्टी में सैकड़ों जीव-जंतु पनपते हैं जो पृथ्वी के वातावरण को शुद्ध रखने के लिए उत्तरदायी होते हैं। इतना ही नहीं मृदा को विभिन्न प्रकार के जीवित कारकों का स्रोत भी माना जाता है।

मृदा स्वास्थ्य

- स्वस्थ्य मृदा का मतलब है कि मृदा में पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों (कार्बनिक पदार्थ, मुख्य एवं सूक्ष्म तत्व) की भरपूर मात्रा एवं नमी रोकने की क्षमता हो। जिससे अधिक फसल उत्पादन लिया जा सकें।
- स्वस्थ मिट्टी बैक्टीरिया, कवक, शैवाल, प्रोटोजोआ, नेमाटोड और अन्य छोटे प्राणियों के साथ मिलाई जाती है। वे जीव पादप स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मिट्टी के जीवाणु प्राकृतिक एंटीबायोटिक्स का उत्पादन करते हैं जो पौधों को रोग का प्रतिरोध करने में मदद करते हैं।

मृदा स्वास्थ्य क्या है और मृदा स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक

- मिट्टी की गुणवत्ता भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों जैसे बनावट, जल-धारण क्षमता, सरंध्रता और कार्बनिक पदार्थ सामग्री पर निर्भर करती है। कुछ मिट्टी अधिक उत्पादक होती हैं क्योंकि वे पौधों के लिए बड़ी मात्रा में पानी और पोषक तत्वों का भंडारण कर सकती हैं।

मृदा स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए आवश्यक पोषक तत्व

- नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश , मुख्य पोषक तत्व; सल्फर (गौण पोषक तत्व), जिंक, आयरन, मैंगनीज, कॉपर, बोरान (सूक्ष्म तत्व) और पीएच मान, वैद्युत चालकता, तथा कार्बन के संबंध में मृदा की स्थिति निहित होती है ।

मृदा स्वास्थ्य आधार में पाँच सिद्धांत

- मृदा स्वास्थ्य आधार में पाँच सिद्धांत शामिल हैं:

1) मृदा कवच; 2) मिट्टी की अशांति को कम करना; 3) पौधों की विविधता; 4) निरंतर जीवित पौधा/पाद; और 5) पशुधन एकीकरण ।

इन सिद्धांतों का उद्देश्य मृदा निर्माण प्रभाव को अधिकतम करना है।

खराब मिट्टी कैसी दिखती है?

- अस्वस्थ मिट्टी में पनपने के लिए आवश्यक नमी और पोषक तत्व नहीं होते हैं, जिससे यह सूखी, भुरभुरी और टूट जाती है । यह आपके हाथों में जल्दी से उखड़ सकती है या अलग करना मुश्किल हो सकता है। इन मामलों में उचित पानी और सिंचाई से मिट्टी की स्थिति में सुधार होगा।
- **मिट्टी खराब होने पर क्या होता है?**
- जब मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आती है और जानवरों और पौधों को सहारा देने की इसकी क्षमता कम हो जाती है। मिट्टी कुछ भौतिक, रासायनिक या जैविक गुणों को खो सकती है जो उसके भीतर जीवन के जाल को रेखांकित करते हैं।

मृदा संरक्षण और उसका स्वास्थ्य

मृदा संरक्षण की विधियाँ

1. वन **संरक्षण**
2. वृक्षारोपण
3. बाढ़ नियंत्रण
4. नियोजित चराई
5. बंध बनाना
6. सीढ़ीदार खेत बनाना
7. समोच्चरेखीय जुताई (कण्टूर जुताई)
8. कृषि की पट्टीदार विधि अपनाना

प्राकृतिक खेती (जैविक खाद सहित) और इसके लाभ

प्राकृतिक खेती क्या है?

प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फ़सल अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध खनिज जैसे- रॉक फास्फेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिए जाते हैं। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फ़सल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है।

प्राकृतिक खेती की अवधारणा

- यह एक विविध कृषि प्रणाली है जो फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करती है, जिससे कार्यात्मक जैव विविधता का उपयोग होता है।
- यदि प्राकृतिक खेती प्रभावी ढंग से की जाती है तो इससे किसानों की आय में वृद्धि होती है, जैसे कि मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरणीय स्वास्थ्य की बहाली, और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना और/या कम करना।

प्राकृतिक खेती की विशेषताएं

- प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों के अनुसार, पौधों को पोषक तत्वों की 98% आपूर्ति हवा, पानी और सूरज की रोशनी से मिलती है।
- मिट्टी हमेशा जैविक गीली घास से ढकी रहती है, जो ह्यूमस बनाती है
- प्राकृतिक खेती में न तो जुताई की जाती है, और न ही कोई उर्वरक दिया जाता है और न ही निराई-गुड़ाई की जाती है,
- खरपतवारों को आवश्यक माना जाता है और इनका उपयोग जीवित या मृत गीली घास की परत के रूप में किया जाता है।

प्राकृतिक खेती से किसानों को फायदा
प्राकृतिक खेती का महत्व
मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बढ़ती है।
सिंचाई का अंतराल बढ़ जाता है।
रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होती है।
फसल की लागत में कमी आती है।
फसलों की उत्पादकता बढ़ जाती है।
www.yojanahindime.in

प्राकृतिक खेती (जैविक खाद सहित) और इसके लाभ

प्राकृतिक खेती अपनाएं कम लागत में अधिक लाभ कमाएं

प्राकृतिक खेती के लाभ

- प्राकृतिक जैव संसाधनों का अधिकतम प्रयोग
- कम लागत में ज्यादा मुनाफा
- पर्यावरण संतुलन में मददगार
- रसायन मुक्त खेती को बढ़ावा
- मिट्टी के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता में वृद्धि
- फसल पर कीट एवं रोग में कमी
- कम पानी में अच्छी पैदावार

प्राकृतिक खेती (जैविक खाद सहित) और इसके लाभ

प्राकृतिक खेती के फायदे:

- भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।
- सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है।
- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।
- बाज़ार में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है ।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती के

'पंचामृत'

जीवामृत	मिट्टी में सूक्ष्मजीवों और केंचुओं की बढ़त
बीजामृत	फंगस और मिट्टी से होने वाली बीमारियों से नई जड़ों की रक्षा
आच्छादन	खरपतवार की वृद्धि को रोकने और नमी बनाए रखने के लिए पौधों को ढकना
वाफसा	सिंचाई की जरूरत कम करने के लिए प्रोत्साहन
इंटरक्रॉपिंग	एक फसल के साथ दूसरी फसल को उगाना

किसानों को कैसे होगा लाभ ?
इनपुट लागत में कमी
मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार
टिकाऊ उत्पादकता सुनिश्चित
कृषि को आत्मनिर्भर बनाएगा

बागवानी आधारित सटीक कृषि तकनीक (पॉलीहाउस, मल्चिंग आदि)

बागवानी आधारित सटीक कृषि तकनीक (पॉलीहाउस, मल्चिंग आदि)

पॉली हाउस क्या होता है:

- पॉलीघर या पॉलीहाउस पॉलीथीन से बना एक रक्षात्मक छायाप्रद घर है जिसका उपयोग उच्च मूल्य वाले कृषि उत्पादों को उत्पन्न करने के लिये किया जाता है। यह अर्धवृत्ताकार, वर्गाकार या लम्बे आकार क हो सकता है। इसमें लगे उपकरणों की सहायता से इसके अन्दर का ताप, आर्द्रता प्रकाश आदि को नियन्त्रित किया जाता है।

पॉली हाउस क्या होता है:

- पॉलीहाउस में खेती (polyhouse farming) को आम भाषा में ग्रीनहाउस में खेती के नाम से भी जानते हैं। यह एक प्रकार की ढंकी हुई संरचना हैं, जिसमें सब्जियों से लेकर फूलों तक का उत्पादन प्लास्टिक की छत के नीचे किया जा सकता है। पॉलीहाउस की संरचना स्टील से बनाई जाती है जिसे प्लास्टिक की शीट या हरी नेट से कवर किया जाता है।

पॉलीहाउस कितने प्रकार के होते हैं?

- ढाँचे की बनावट के आधार पर पॉली हाउस कई प्रकार के होते हैं। जैसे- गुम्बदाकार, गुफानुमा, रूपान्तरित गुफानुमा, झोपड़ीनुमा आदि। पहाड़ों पर रूपान्तरित गुफानुमा या झोपड़ीनुमा डिजायन अधिक उपयोगी होते हैं।

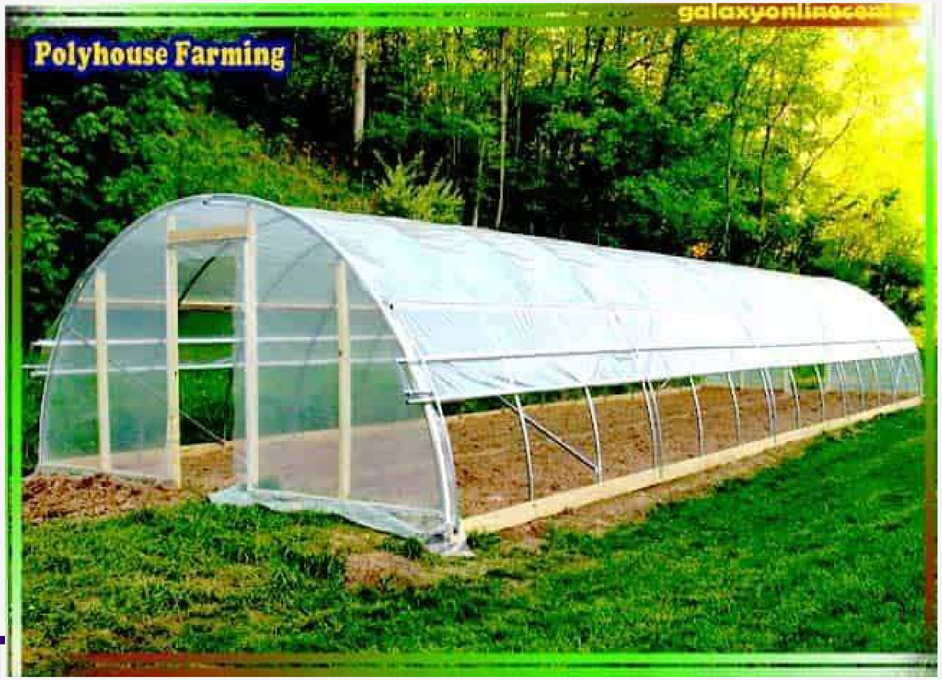

पॉलीहाउस खेती के लाभ

- एक पॉलीहाउस में, आप एक प्रशासित वातावरण में आसानी से फसलों का उत्पादन कर सकते हैं।
- किसान साल भर फसल उगा सकते हैं चाहे मौसम कोई भी हो।
- पॉलीहाउस के अंदर सुरक्षित रूप से उगने के कारण कीट, रोग और कीड़े फसल को नुकसान नहीं पहुंचा सकते।
- बाहरी जलवायु पौधों की वृद्धि को प्रभावित नहीं कर सकती है।

पाली हाउस में कितना खर्च आता है?

- पॉलीहाउस स्थापित करने में लगभग 750 रुपये से 1000 रुपये प्रति वर्ग मीटर का खर्च आता है। लागत की सीमा सामग्री की गुणवत्ता, स्थान, आकार, आकार और संरचना जैसे कुछ कारकों पर निर्भर करती है। हम सहायक सामग्री के रूप में बांस, धातु के पाइप, लकड़ी आदि का उपयोग कर सकते

कृषि-वानिकी और इसके लाभ

कृषि वानिकी क्या है?

फसलों के साथ-साथ पेड़ों एवं झाड़ियों को समुचित प्रकार से लगाकर दोनो के लाभ प्राप्त करने को कृषि वानिकी (Agroforestry) कहा जाता है। इसमें कृषि और वानिकी की तकनीकों का मिश्रण करके विविधतापूर्ण, लाभप्रद, स्वस्थ एवं टिकाऊ भूमि-उपयोग सुनिश्चित किया जाता है।

कृषि वानिकी का महत्त्व

वन-पौधों व फलदार पौधों का चयन जलवायु, भूमि, मांग, आदि को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इस पद्धति का लाभ यह है कि प्रारंभिक अवस्था में,जब वन- पौधे तैयार नहीं होते तब फलदार वृक्षों से कृषक को आय प्राप्त हो जाती है और बाद में जब फलदार वृक्ष लाभ नहीं दे रहे होते तब वन-पौधों से भी आमदनी हो जाती है।

कृषि वानिकी का महत्त्व

वन-पौधों व फलदार पौधों का चयन जलवायु, भूमि, मांग, आदि को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इस पद्धति का लाभ यह है कि प्रारंभिक अवस्था में,जब वन- पौधे तैयार नहीं होते तब फलदार वृक्षों से कृषक को आय प्राप्त हो जाती है और बाद में जब फलदार वृक्ष लाभ नहीं दे रहे होते तब वन-पौधों से भी आमदनी हो जाती है।

कृषि वानिकी के उद्देश्य

- वर्षा का प्रभावी उपयोग करके अधिक से अधिक उत्पादन लेना।
- बेकार/बंजर भूमि का वैकल्पिक उपयोग कर पोषक तत्वों के जमाव से भूमि सुधार करना।
- बेरोजगारों एवं कृषि श्रमिकों को रोजगार के अवसर प्रदान करना।
- पर्यावरण, पारिस्थितिकी, जलवायु को सुव्यवस्थित कर सुधार करना।

कृषि वानिकी के लाभ

01. कृषि वानिकी को सुनिश्चित कर खाद्यान्न को बढ़ाया जा सकता है।

02. बहुउद्देश्यीय वृक्षों से ईंधन, चारा व फलियां, इमारती लकड़ी, रेशा, गोंद, खाद आदि प्राप्त होते हैं।

03. कृषि वानिकी के द्वारा भूमि कटाव की रोकथाम की जा सकती है और भू एवं जल संरक्षण कर मृदा की उर्वरा शक्ति में वृध्दि कर सकते हैं।

कृषि वानिकी के लाभ

05. इस पध्दति के द्वारा ईंधन की पूर्ति करके गोबर का उपयोग जैविक खाद के रूप में किया जा सकता है।

06. वर्ष भर गांवों में कार्य उपलब्धता होने के कारण शहरों की ओर युवकों का पलायन रोका जा सकता है।

07. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में इस पध्दति का महत्वपूर्ण योगदान है।

08. कृषि वानिकी में जोखिम कम है। सूखा पड़ने पर भी बहुउद्देशीय फलों से कुछ न कुछ उपज प्राप्त् हो जाती है।

कृषि-वानिकी और इसके लाभ

- कृषि-वानिकी एक विकासशील और संरक्षित कृषि प्रणाली है जो केवल मृदा और पानी के उपयोग को कम करती है, बल्कि फसलों की उत्पादनता और गुणवत्ता को बढ़ाती है।
- कृषि-वानिकी में प्राकृतिक उपज और जैविक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है, जो जल, बिजली और खाद्य संसाधनों की बचत करते हैं।
- इस प्रणाली में अनुकूल प्रबंधन, बीज संरक्षण, जैविक कीटनाशकों का उपयोग और बागवानी संरचना की सटीकता को ध्यान में रखा जाता है।
- कृषि-वानिकी से उत्पन्न उत्पादों में जैविक खाद्य मानकों को पूरा किया जाता है, जो उत्पादों की गुणवत्ता और पोषण मानकों को बढ़ाता है।
- इस प्रणाली में पेस्टिसाइड्स, कीटनाशकों और हानिकारक रसायनों का कम उपयोग होता है, जो पर्यावरण को बचाने और भीषण प्रभावों से बचाने में मदद करता है।

कृषि-वानिकी और इसके लाभ

- कृषि-वानिकी फसलों के रोगों और कीटों के प्रबंधन में प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करती है, जिससे रोग प्रतिरोधी प्रणाली विकसित होती है।
- इस प्रणाली से किसानों की आय और आर्थिक स्थिरता में सुधार होता है, क्योंकि वानिकी उत्पादों के आपूर्ति में वृद्धि होती है और उन्नत बाजार अवसर प्राप्त होते हैं।
- कृषि-वानिकी धरती की मृदा स्वास्थ्य को सुधारती है, जिससे माइक्रोबायोम और मृदा की उपजाऊता में सुधार होता है।
- इस प्रणाली में पोषण संतुलन बढ़ता है, जिससे उत्पादों में पोषक तत्वों की गुणवत्ता बढ़ती है और पोषण समस्याओं को कम किया जाता है।

कृषि वानिकी की पद्धतियाँ

01. एग्री सिल्वी कल्चर (फसलें+ईंधन वाले पेड़) प्रणाली – यह पद्धति पेड़ उगाने और खाद्य फसलों की खेती तथा पेड़ो के बीच उपलब्ध स्थान पर चारा या फसल उगाने से सम्बन्धित है। इस प्रकार ऐसी प्रणाली अपनाने से किसान अपनी सीमित भूमि से लकड़ी, भोजन, चारा आदि प्राप्त कर लेता है। उदाहरण – बाजरा, मक्का, ज्वार आदि को अकेसिया एल्बिडा वृक्ष के साथ उगाना।

02. सिल्वी पेस्टरल (पेड़, चारागाह, पशु) प्रणाली – इस प्रणाली के अंतर्गत लकड़ी के उत्पादन के लिए सीमित भूमि पर वृक्ष उगाये जाते हैं तथा पशुओं को पालने के लिए पेड़ों के बीच में उपलब्ध स्थानों पर घासें उगाई जाती हैं।

कृषि वानिकी की पद्धतियाँ

03. हार्टि-एग्री-सिल्वी (फसलें+फल+ ईंधन वाले पेड़) – यह प्रणाली अनोखी तथा स्थानपरक होती है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के वन-वृक्ष मुख्य रूप से भूमि पर उगाये जाते हैं। तथा उनके बीच उपलब्ध भूमि में फल वृक्ष उगाये जाते हैं, इसमें फल उत्पादकों को पैकिंग के लिए कच्चा माल भी मिल जाता है जो इसके अतिरिक्त लाभ के रूप में प्राप्त होता है, जैसे – मूंग, उर्द, तिल, ग्वार, (फसलें) +आवँला + खेजड़ी को साथ लेना।

04. एग्री हार्टीकल्चर (फसलें + फलदार पेड़) प्रणाली – कृषि वानिकी के इस स्वरूप में फसलों के साथ केवल फलदार वृक्ष ही लगाये जाते हैं। अतः इस पद्धति से प्रति इकाई क्षेत्र से अधिक लाभ प्राप्त होता है।

जैसे – आँवला के साथ मसूर, चना, मटर लेना।

05. एग्री सिल्वी पेस्टोरल (फसलें + पेड़ + चारागाह + पशु) प्रणाली

कृषि वानिकी के लिए उपयुक्त फसलों एवं वृक्षों का चुनाव

- 01. शीघ्र बढ़ने वाली जातियों/प्रजातियों का चयन किया जाना चाहिए और पौधे सीधे ऊपर की ओर वृद्धि करते हों तथा उनका फैलाव कम से कम हो।
- 02. कम से कम शाखायें निकलें अर्थात जमीन पर से ही अधिक घनी न हो।
- 03. साथ में लगी अन्य फसलों से प्रतिस्पर्धा ना करें।
- 04. कम से कम पोषक तत्व, सिंचाई व देखभाल की आवश्यकता [illegible]।

कृषि वानिकी के लिए उपयुक्त फसलों एवं वृक्षों का चुनाव

- 06. कृषकों के लिए उसकी पत्तियाँ, लकड़ी आदि लाभकारी हों।
- 07. पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा प्रदान कर सकें।
- 08. रोगों के प्रति रोगरोधी हों, छाया से सहनशील होना चाहिए।
- 09. जड़े एवं उनकी वृद्धि की विशेषता ऐसी होनी चाहिए जिससे भूमि के विभिन्न सतहों पर कृषि फसल प्रभावित न हो।
- 10. पौधों के प्रत्येक भाग किसानों के लिए उपयोगी हो।

प्रत्येक ग्राम पंचायत में प्रगतिशील किसानों की पहचान और प्रतिभागियों के साथ उनकी कहानी साझा करना।

- \- प्रत्येक ग्राम पंचायत में प्रगतिशील किसानों की पहचान करने के लिए सर्वेक्षण और जांच कार्यक्रम आयोजित करें।
- \- प्रतिभागियों को संग्रहीत करें और उनके साथ वार्तालाप करें, उनकी अनुभव सुनें और संदर्भ का आकलन करें।
- \- प्रत्येक प्रगतिशील किसान की कहानी, उनकी कठिनाइयाँ, सफलताएं, उनकी उपलब्धियां और उनके सामरिक पहल को समझने के लिए समय निकालें।
- \- किसानों की पहचान और किसानों की कहानियों को प्रतिभागियों के साथ साझा करें, ताकि वे अन्य किसानों के साथ अपने अनुभव और सफलताओं को साझा कर सकें।
- \- प्रतिभागियों के बीच किसानों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिभागी गतिविधियों, वर्कशॉप्स और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करें।
- \- प्रतिभागियों के साथ किसानों के बीच जागरूकता और अनुसरण के लिए वार्ड स्तर पर परिषदें, किसान किसानों सम्मेलनों करें।

वर्षा जल संचयन और पसंदीदा संरचनाएं (जैसे छत के ऊपर वर्षा जल संचयन, पुनर्भरण शाफ्ट, सोख गड्ढे आदि)

- वर्षा जल संचयन की तकनीकें बागवानी में महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इससे वर्षा के पानी का उपयोग संग्रहित और उपयोग में लाया जा सकता है।
- छत के ऊपर वर्षा जल संचयन की तकनीक विशेष रूप से उपयोगी है, जहां छत से वर्षा जल को संकलित किया जाता है और उसे बागवानी के लिए उपयोग किया जा सकता है
- पुनर्भरण शाफ्ट एक और प्रभावी वर्षा जल संचयन तकनीक है, जहां जल को भूमि में अवशोषित करने के लिए एक गहरा शाफ्ट खोदा जाता है। यह भूमि के अंदर जल स्तर को बढ़ाता है और पानी के निकास को रोकता है।
- सोख गड्ढे एक और प्रभावी वर्षा जल संचयन तकनीक हैं, जिसमें जल को सोखा जाता है और धरती में विराम दिया जाता है। इससे भूमि में जल स्तर बढ़ता है और पानी को स्टॉक किया जा सकता है जो बाद में उपयोग के लिए निकाला जा सकता है।
- इन संरचनाओं का उपयोग करके वर्षा जल का संग्रहण और उपयोग किया जा सकता है, जिससे कृषि क्षेत्रों में पानी की कमी को कम किया जा सकता है। इससे स्थायी उत्पादकता बढ़ती है और जल संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है।

स्थायी भूजल प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका और अटल भूजल योजना के उद्देश्य

स्थायी भूजल प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका और अटल भूजल योजना के उद्देश्य

- महिलाओं की भूमिका स्थायी भूजल प्रबंधन में महत्वपूर्ण है। उन्हें जल संसाधनों के संरक्षण, उपयोग, और प्रबंधन में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए।
- महिलाओं को जल संबंधित प्रशिक्षण, जागरूकता कार्यक्रम, और कौशल विकास के लिए संगठित किया जाना चाहिए।
- अटल भूजल योजना का उद्देश्य है स्थायी भूजल संसाधनों को प्रबंधन करना, उनकी उपयोगिता को बढ़ाना, और भूजल संबंधित समस्याओं का समाधान करना।

स्थायी भूजल प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका और अटल भूजल योजना के उद्देश्य

- यह योजना समस्त ग्राम पंचायतों को संगठित करने, जल संबंधित नीतियों और कानूनों के प्रचार-प्रसार करने, जल संबंधित संरचनाओं का निर्माण करने, और जल संबंधित संगठनों की स्थापना करने का लक्ष्य रखती है।
- यह योजना स्थायी भूजल प्रबंधन के लिए संगठनों, प्रशासनिक अवसरों, तकनीकी सहायता वित्तीय सहायता, और जल संबंधित प्रोजेक्टों के लिए सब्सिडी प्रदान करती है।

ऑन-फार्म टैंकों का निर्माण और एमआई सिस्टम पर सौर पंपों की स्थापना (कैसे आवेदन करें और सब्सिडी प्राप्त करें)

ऑन-फार्म वाटर टैंक निर्माण

कृषि और बागवानी फसलों में सूक्ष्म सिचाई के प्रयोग के लिए ऑन-फार्म वाटर टैंक निर्माण के लिए सरकार ने वित्तीय सहायता की नीति लागू की है। इस नीति का उद्देश्य जलस्त्रोत का एकीकरण, वितरण और इसका कुशल उपयोग, उपयुक्त जल बचत, उपकरणों के माध्यम से पानी का सर्वोत्तम उपयोग करना, फसलों की आवश्यकता अनुसार जल प्रबंधन को बढ़ावा देना है।

ऑन-फार्म वाटर टैंक निर्माण

हर खेत तक पानी पहुंचाने के उद्देश्य के चलते मी.काडा द्वारा सूक्ष्म सिंचाई व फव्वारा पद्धति के लिए खेतों में सामुदायिक व व्यक्तिगत स्तर पर जल संग्रह के लिए टैंकों का निर्माण करवाया जाएगा। इस योजना को ऑन फार्म तालाब नीति का नाम दिया गया है, इस योजना का लाभ पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर मिलेगा। सामुदायिक योजना के तहत 85 प्रतिशत तथा व्यक्तिगत पर 70 प्रतिशत की सब्सिडी प्रदान की जाएगी।

ऑन-फार्म वाटर टैंक निर्माण

सामुदायिक योजना में विभाग स्वयं टैंक का निर्माण करवाएगा, जबकि व्यक्तिगत के लिए निर्माण खेत के मालिक द्वारा करवाया जाएगा, जिस पर 70 प्रतिशत सब्सिडी तीन चरणों में दी जाएगी, जिसमें पहली टैंक की खुदाई के समय, दूसरी टैंक के निर्माण होने पर तथा अंतिम सब्सिडी किश्त सूक्ष्म प्रणाली के माध्यम से खेत में सिंचाई होने पर दी जाएगी। ये तीनों सब्सिडी निर्माण कार्य खर्च पर अलग.अलग आधारित होंगी। सिंचाई के लिए सोलर सिस्टम लगाया जाएगा।

ऑन-फार्म वाटर टैंक निर्माण

ऑफ ग्रिड क्षेत्रों में, जहां ग्रिड आपूर्ति उपलब्ध नहीं है। मौजूदा डीजल कृषि पंपों सिंचाई प्रणालियों के लिए किसानों की 10 एचपी तक क्षमता के स्टैंड अलोन सौर ऊर्जा पंपों को स्थापित करने में सहायता की जाएगी। किसानों समुदाय क्लस्टर आधारित सिंचाई प्रणाली की क्षमता 3 एचपी से 10 एचपी तक 75 प्रतिशत सब्सिडी पर सोलर वाटर पंपिंग सिस्टम प्रदान किया जाएगा।

ऑन-फार्म वाटर टैंक निर्माण

ऑफ ग्रिड क्षेत्रों में, जहां ग्रिड आपूर्ति उपलब्ध नहीं है। मौजूदा डीजल कृषि पंपों सिंचाई प्रणालियों के लिए किसानों की 10 एचपी तक क्षमता के स्टैंड अलोन सौर ऊर्जा पंपों को स्थापित करने में सहायता की जाएगी। किसानों समुदाय क्लस्टर आधारित सिंचाई प्रणाली की क्षमता 3 एचपी से 10 एचपी तक 75 प्रतिशत सब्सिडी पर सोलर वाटर पंपिंग सिस्टम प्रदान किया जाएगा।

मनोहर सरकार विकास अपार
प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान
हरियाणा के किसानों को सोलर पंप पर 75 प्रतिशत अनुदान
श्री मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा
प्रदेश के 50,000 किसानों को 3 एच.पी. से 10 एच.पी. क्षमता के सोलर पंप पर 75 प्रतिशत सब्सिडी देने की योजना। पात्र किसान (जिन्होंने सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली/भूमिगत पाइप लाइन लगाई हो अथवा लगाने को सहमत हो) सौर पंप लगा कर सिंचाई कर सकते हैं। प्रथम चरण में इस वर्ष 15,000 सोलर पंप लगाने के लिए आवेदन आमंत्रित किये जाते है।
सोलर ट्यूबवैल लगवाने के लाभ
• दिन के समय की जा सकेगी पर्याप्त सिंचाई
• बिजली के बिल से छुटकारा
• पर्यावरण के अनुरूप व प्रदूषण रहित बिजली
• पहले 5 साल तक रख–रखाव का खर्च नहीं
• बिजली कटों से छुटकारा
• एक बार का नाममात्र खर्च जोकि पारंपरिक बिजली नलकूप से बहुत कम
सोलर पंप लगाएं डीजल व बिजली बचाएं
अनुमानित लागत

पंप की क्षमता	अनुमानित लागत (पांच साल के रख–रखाव सहित)	सरकार द्वारा अनुदान राशि (75%)	उपभोक्ता द्वारा देय राशि (अनुमानित)
3 एच.पी.	2,35,000	1,76,250	58,750
5 एच.पी.	3,33,000	2,49,750	83,250
7.5 एच.पी.	4,78,000	3,58,500	1,19,500
10 एच.पी.	6,10,000	4,57,500	1,52,500

आवेदन सरल पोर्टल www.saralharyana.gov.in पर 16.08.2019 से ऑनलाइन किया जा सकता है।
अधिक जानकारी के लिए
अपने जिले के अतिरिक्त उपायुक्त कार्यालय अथवा नोडल अधिकारी 9872955129 से संपर्क करें
नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग, हरियाणा
अक्षय ऊर्जा भवन, सेक्टर–17, पंचकूला, दूरभाष: 0172–2587233, 2587833
ई–मेल: hareda-chd@nic.in, वेबसाइट: www.hareda.gov.in

Sr. No.	Type and capacity of solar pump	* अनुमानित उपभोक्ता देय राशि
1	3 HP DC, Surface (Monoblock) with normal Controller	55,000
2	3 HP DC, Submersible with Normal Controller	56,000
3	5HP Surface (Monoblock) with Normal Controller	78,000
4	5 HP Submersible (Monoblock) with Normal Controller	79,000
5	7.5 HP DC Surface (Monoblock) with Normal Controller	1,11,000
6	7.5 HP DC, Submersible with Normal Controller	1,12,000
7	10 HP DC, Submersible with Normal Controller	1,37,000
8	10 HP DC Surface (Monoblock) with Normal Controller	1,39,000
9	3HP DC, Surface (Monoblock) with Universal Solar Pump Controller	80,000
10	3HP DC, Submersible with Universal Solar Pump Controller	83,000
11	5HP DC, Surface (Monoblock) with Universal Solar Pump Controller	1,02,000
12	5HP DC, Submersible with Universal Solar Pump Controller	1,05,000
13	7.5 HP DC, Surface (Monoblock) with Universal Solar Pump Controller	1,54,000
14	7.5 HP DC, Submersible with Universal Solar Pump Controller	1,67,000
15	10 HP DC, Surface (Monoblock) with Universal Solar Pump Controller	2,05,000
16	10 HP DC, submersible with Universal Solar Pump Controller	2,12,000

■सोलर वाटर पम्प सिस्टम के लिए आवेदन कैसे करें

- ✓ सबसे पहले सरल हरियाणा ऑफिसियल वेबसाईट saralharyana.gov.in पर विज़िट करें।
- ✓ यदि सरल हरियाणा पोर्टल पर आपका अकाउंट बना हुआ है तो लॉगिन करें यदि नहीं बना हुआ है तो पहले अपना अकाउंट बना लें। (अकाउंट बनाने के लिए होम स्क्रीन पर दिए New User? Register Here बटन पर क्लिक करें।)

■ सोलर वाटर पम्प सिस्टम के लिए आवेदन कैसे करें

- ✓ लॉगिन करने के बाद बाईं तरफ मेनू मे Apply for Service पर क्लिक करें। व उसके बाद View All Available Services पर क्लिक करें।
- ✓ उसके बाद आपको हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी योजनाओं की सूची दिखाई देगी। इसके सर्च बार मे solar लिखकर सर्च करें।
- ✓ उसके बाद आपको लिस्ट मे Appplication for Solar Water Pumping Scheme लिखा दिखाई देगा। उस पर क्लिक करें।

■सोलर वाटर पम्प सिस्टम के लिए आवेदन कैसे करें

- ✓ उसके बाद अगले विंडो मे Farmer Declaration Form दिखाई देगा, उसे डाउनलोड कर लें। व Proceed to Apply पर क्लिक करें।
- ✓ उसके बाद हरियाणा सोलर वाटर पम्प सिस्टम के लिए आवेदन फॉर्म भरें व जो भी जानकारी मांगी गई उसे दर्ज करें।

अधिक जानकारी व कोई समस्या आने पर हरियाणा सरकार की आधिकारिक वेबसाईट harera.gov.in पर विज़िट करें।

सोशल ऑडिट

सोशल ऑडिट

1. सोशल ऑडिट अटल भूजल योजना का महत्वपूर्ण तत्व है जो योजना के प्रभाव और प्रगति का मूल्यांकन करता है।
2. सोशल ऑडिट के माध्यम से योजना के उद्द्देश्य, मंच, और निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन होता है।
3. यह ऑडिट सामाजिक प्रभाव, लाभार्थियों की संपत्ति, न्याय, और संघर्ष की स्थिति आदि को मापता है।

सोशल ऑडिट

4. सोशल ऑडिट उपयोगकर्ताओं की भागीदारी, संगठनों के नेतृत्व, और स्थानीय समुदायों के सहयोग का मूल्यांकन करता है।

5 .यह योजना के लक्ष्यों की सामरिकता, सामरिक उपायों की कार्यगतता, और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में मदद करता है।

6. सोशल ऑडिट रिपोर्ट योजना के प्रशासनिक, नियंत्रण, और निगरानी माध्यमों को सुधारने के लिए सुझाव देता है।

सोशल ऑडिट

प्रत्येक प्रतिभागियों को एक सोशल ऑडिट के मूल्यांकन हेतु प्रश्ननवली दी जाएंगी। जिसे भरवा कर वापिस की जाएंगी।

ततपश्चात योजना का प्रभाव मूल्यांकन कर रिपोर्ट तैयार की जाएगी।

संपर्क जानकारी:

अधिक जानकारी या सहायता के लिए संपर्क विवरण :

IEC एक्सपर्ट : नाम.............मोबाईल नम्बर:..........सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, ...

GWE एक्सपर्ट: नाम.............मोबाईल नम्बर:..........सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग,

ATAL BHUJAL YOJANA

Thank you!